सोशल साइटों की सामाजिकता का सवाल

■ गंगा सहाय मीणा

यह दिलचस्प है कि एक तरफ इंटरनेट तकनीक को सामाजिकता के रास्ते में बाधक माना गया, वहीं दूसरी तरफ आज दुनियाभर के युवाओं को जोड़ने का सबसे बड़ा माध्यम सोशल नेटवर्किंग साइट हैं। फेसबुक दुनिया की नंबर एक सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट के रूप में ख्यात है। हॉलीवुड में 1 अक्टूबर 2010 को फेसबुक पर आधारित डेविड फिंकर की 'द सोशल नेटवर्क' फिल्म भी आई थी। फेसबुक की लगातार बढ़ती लोकप्रियता का कारण इसका बहुआयामी होना है।

एक दूसरी नेटवर्किंग साइट 'ट्विटर' की सीमा यह है कि उसमें एक तरह की 'हाइरारकी' (अभिजात्यता) है। आप अपने चहेते व्यक्ति (नेता, अभिनेता आदि) को 'फोलो' कर सकते हैं, उसकी लिखी 'अपडेट्स' आप तक पहुंचती रहेंगी, लेकिन आपकी लिखी बात उस तक नहीं पहुंच पायेगी। आज लोकतांत्रिक दौर में ऐसी सामंती चरित्र वाली नेटवर्किंग साइट के भी उपयोगकर्ता मौजूद हैं, लेकिन जाहिर है कि इसकी तुलना में अगर कोई ज्यादा लोकतांत्रिक विकल्प उपस्थित होगा तो निश्चय ही लोग उसे अपनायेंगे। फेसबुक यह लोकतांत्रिक स्पेस उपलब्ध कराती है। दोस्त बनाकर उनसे चैट करने की सुविधा तो आर्कुट आदि लगभग सभी सोशल नेटवर्किंग साइट उपलब्ध कराती हैं, फेसबुक इनसे कहीं आगे जाती है। फेसबुक में एक 'कामन वॉल' है।

फेसबुक यह लोकतांत्रिक स्पेस उपलब्ध कराती है। दोस्त बनाकर उनसे चैट करने की सुविधा तो आर्कुट आदि लगभग सभी सोशल नेटवर्किंग साइट उपलब्ध कराती हैं, फेसबुक इनसे कहीं आगे जाती है। फेसबुक में एक 'कामन वॉल' है। इसमें जैसे ही आप कुछ लिखते हैं, वह आपके सभी मित्रों की वॉल पर भी दिखने लगेगा।

इसमें जैसे ही आप कुछ लिखते हैं, वह आपके सभी मित्रों की वॉल पर भी दिखने लगेगा। आपके लिखे हुए के नीचे तीन विकल्प भी दिखने लगेंगे- कमेंट, लाइक और शेयर। आपकी लिखी हुई बात 'स्टेटस' कही जाती है। इसी तरह अगर आपका कोई दोस्त 'कॉमन वॉल' (आजकल इसे टाइमलाइन कहा जाने लगा है) पर कुछ लिखता है तो वह आप सहित उसके सभी दोस्तों की वॉल पर दिखने लगेगा। फीडबैक की सुविधा संलग्न है- आप उसे पसंद कर सकते हैं, टिप्पणी कर सकते हैं, पसंद आए तो अपनी वॉल पर डालकर अपने दोस्तों के बीच शेयर कर सकते हैं। यानी आप बड़े से बड़े, महान से महान व्यक्ति (यदि वह

आपकी मित्रता सूची में है) की लिखी बात पर तुरंत टिप्पणी कर सकते हैं, उसकी लिखी बात की आलोचना भी कर सकते हैं। आपकी पसंद/नापसंद और टिप्पणी उसकी और उसके दोस्तों की वॉल पर भी दिखेगी। इतना लोकतांत्रिक मंच और त्वरित फीडबैक की सुविधा इससे पहले नहीं थी। पत्र-पत्रिकाओं में लेखक लिखते थे लेकिन उन्हें इस बात का पता आसानी से नहीं चल पाता था कि उनकी लिखी बात पर पाठकों की क्या प्रतिक्रिया है। फेसबुक द्वारा उपलब्ध कराई गई इस सुविधा ने लेखन, पाठन और फीडबैक की प्रक्रिया को त्वरित और लोकतांत्रिक बनाया है।

फेसबुक नई सामाजिकता भी गढ़ रही है। आज जब दुनियाभर के युवा अपना अधिकतम खाली समय इंटरनेट को देने लगे हैं, तब इस बात की चिंता होना स्वाभाविक है कि कहीं इंटरनेट उन्हें असामाजिक तो नहीं बना रहा. निश्चय ही इंटरनेट ने

पत्र–पत्रिकाओं में लेखक लिखते थे लेकिन उन्हें इस बात का पता नहीं चल पाता था कि उनकी लिखी बात पर पाठकों की क्या प्रतिक्रिया है। फेसबुक द्वारा उपलब्ध कराई गई इस सुविधा ने लेखन, पाठन और फीडबैक की प्रक्रिया को त्वरित और लोकतांत्रिक बनाया है।

सामाजिकता को प्रभावित किया है। लेकिन साथ ही सोशल नेटवर्किंग साइट नई सामाजिकता गढ़ भी रही हैं। इसे हम 'वर्चुअल सामाजिकता' कह सकते हैं और वहां बन रहे रिश्ते वर्चुअल रिश्ते कहे जा सकते हैं। इन वर्चुअल रिश्तों और इनसे निर्मित सामाजिकता का वास्तविक रिश्तों व सामाजिकता से कोई विरोध का संबंध नहीं है, बल्कि ये सहयोगी भूमिका में ही अधिक हैं। फेसबुक के नियमित उपयोगकर्ता बताते हैं कि उनके कई अच्छे मित्रों से उनकी दोस्ती फेसबुक पर हुई। साथ ही आप फेसबुक पर अपने मोहल्ले, गांव, स्कूल, कॉलेज आदि के पुराने दोस्तों को खोज उनसे भी जुड़ सकते हैं। फेसबुक इन वर्चुअल-कम-रीयल रिश्तों से नई सामाजिकता गढ़ रही है। लगभग सभी नेता, अभिनेता, लेखक आदि ऐसे तमाम लोग वहां उपलब्ध हैं, जिन तक अपनी बात पहुंचाने की, जिनसे संवाद करने की आपकी चिर अभिलाषा है। वहां

हर व्यक्ति की प्रोफाइल है, जिसमें उसकी पढ़ाई-लिखाई, रुचियों आदि की जानकारी है। यहां उम्र का भी कोई बंधन नहीं है। आप दोस्ती के लिए अपने अनुरूप व्यक्ति का चुनाव कर सकते हैं। अगर आपकी बात महत्वपूर्ण है तो इसकी पूरी संभावना है कि आपका प्रिय नेता, अभिनेता या लेखक उस पर जरूर गौर करेगा और आवश्यक प्रतिक्रिया व्यक्त करेगा। हिन्दी के रामदरश मिश्र, रमेश उपाध्याय, उदय प्रकाश सहित कई वरिष्ठ लेखक फेसबुक पर हैं। आप अपनी कविता या लेख लिखकर भी फेसबुक में 'नोट' के रूप में डाल सकते हैं। अगर आपकी लेखनी में मौलिकता और कुछ खास है तो इसकी पूरी संभावना है कि उस पर टिप्पणियों की झड़ी लग जाए। टिप्पणी करने वालों में वरिष्ठ लेखक भी शामिल हो सकते हैं। इंटरनेट की पहुंच वाली सीमा को छोड दें तो फेसबुक के जरिए यह लेखक और पाठक का समानता के आधार पर अधिकतम लोकतांत्रिक संबंध है। कविता और लेखों के अलावा फेसबुक पर फोटो, वीडियो, लिंक आदि भी शेयर कर सकते हैं। आपका खींचा हुआ फोटो या वीडियो चंद मिनटों में ग्लोबल हो जाएगा।

इसी तरह कोई लिंक भी- आपके अपने ब्लॉग से लेकर किसी महत्वपूर्ण वेबसाइट का लिंक, जो आपकी नजर में आपके दोस्तों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। ब्लॉग का प्रचार-प्रसार करने का तो फेसबुक एक लोकप्रिय माध्यम है। कविता, लेख, फोटो आदि में आप अपने दोस्तों को भी 'टैग' कर सकते हैं। टैग करने के बाद आपकी रचना उनकी प्रोफाइल पर तथा उनके मित्रों की वॉल पर भी दिखने लगेगी। इस तरह फेसबुक धीरे-धीरे सृजनात्मकता के प्रसार का एक नया व सशक्त माध्यम बनता जा रहा है। त्वरित प्रतिक्रिया तो फेसबुक की नई, मौलिक व दिलचस्प विशेषता है ही। इससे भी एक कदम आगे फेसबुक ने फीडबैक (प्रतिक्रिया) पर प्रतिक्रिया की सुविधा भी उपलब्ध कराई है।

इससे पहली बार यह जानना संभव हो पाया है कि रचना पर पाठक की प्रतिक्रिया को लेखक ने किस रूप में लिया है। हिन्दी के कई बुजुर्ग लेखकों, आलोचकों का आरोप है कि फेसबुक पर आने वाली रचनाओं व टिप्पणियों में गंभीरता का अभाव है। इस आरोप में आंशिक सच्चाई है। फेसबुक की एक अन्य खासियत इसमें दी गई 'ग्रुप' और 'ईवेन्ट्श' सुविधाएं हैं। उपयोगकर्ता अपनी पसंद के ग्रुप या समूह से जुड़कर संबंधित क्षेत्र की अपडेट प्राप्त कर

सकते हैं तथा अपनी जिज्ञासाएं बांटकर उनका समाधान भी प्राप्त कर सकते हैं। उपयोगकर्ता स्वयं भी समूह का निर्माण कर सकता है। समूह का निर्माण स्थान, विचारधारा, कॉलेज या विश्वविद्यालय आदि के आधार पर होता है।

इसी तरह फेसबुक में 'ईवेन्टर' निर्माण की सुविधा भी अनूठी है। अगर आप गोष्ठी या अन्य कोई आयोजन कर रहे हैं तो आप फेसबुक की मदद से एक साथ अपने तमाम दोस्तों को आयोजन के ब्यौरे के साथ निमंत्रण भेज सकते हैं। फेसबुक पर आगंतुकों द्वारा दर्ज की गई स्वीकार्यता/अस्वीकार्यता के आधार पर संभावित मेहमानों का अंदाजा भी लगा सकते हैं। यात्रा बुक्स, मोहल्ला लाइव और जनतंत्र की ओर से हर माह आयोजित किये जाने वाले 'बहसतलब' में आधे से अधिक लोग फेसबुक पर भेजे गए आमंत्रण से ही आते हैं। मेरा स्वयं का अनुभव है कि जेएनयू में आयोजित कई सफल गोष्ठियों में लगभग आधे श्रोता फेसबुक के आमंत्रण से आते हैं। फेसबुक की एक और महत्वपूर्ण भूमिका पर बात होनी चाहिए। मुख्यधारा के मीडिया में विभिन्न कारणों से समाज में घटित सारी खबरें नहीं आ पातीं।

फेसबुक के उपयोगकर्ता मीडिया के वैकल्पिक स्रोतों से वे खबरें लाकर फेसबुक पर शेयर करते हैं जो देश और समाज के बारे में हमारी समझ का विकास करती हैं। कई घटनाएं, जिनको छोटा मान लिया जाता है या विभिन्न कारणों से दबा दिया जाता है, फेसबुक की मदद से लोगों तक पहुंचती हैं और वहां पर बहस होने के बाद मुख्यधारा की खबरें भी बनती हैं, यहां तक कि सरकार के फैसलों को प्रभावित करती हैं। इस दृष्टि से फेसबुक एक वैकल्पिक मीडिया का काम भी करता है। धीरे-धीरे फेसबुक पर हुई बहसों और टिप्पणियों को गंभीर पुस्तकों में उद्धृत किया जाने लगा है। फेसबुक एक गंभीर जिम्मेदारी निभाने की दिशा में है। यही वह समय है जब हमें सभी पक्षों पर विचार कर फेसबुक की भूमिका तय करनी चाहिए। ⬟

(लेखक जेएनयू में प्राध्यापक हैं।)